RARE BOOK

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता।
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

वर्ग संख्या
Class No. 891·4314
पुस्तक संख्या
Book No. Du 871
रा० पु० / N. L. 38.

MGIPC—S4—9 LNL/66—I 3-12-66—1,50,000.

50/64

॥ श्री ॥

कवि आढा दुरसाजी कृत हिंदुपति श्रीमान् महाराजाधिराज महाराणा जी श्री १०८ श्री प्रतापसिंहजी की बिरदछिहत्तरी.

जिसको

जोधपुर राज्यके भूतपूर्व मेंबर कौन्सिल
और बख्शी जागीर
सिंघवी बछराजजीने

दाधीच आसोपा पंडित बलदेवरामात्मज
पंडित रामकर्ण-श्यामकर्णके
प्रतापप्रेस जोधपुर में छपवाकर प्रसिद्ध करी

SHELF LISTED

H
891.4314
Du 871

NATIONAL LIBRARY
No. 24087
Date 21-8-68
CALCUTTA

भूमिका

हिन्दुपति श्रीमान् महाराजाधिराज महाराणाजी श्री १०८ श्री प्रतापसिंहजीने हिन्दु धर्मकी रक्षाके निमित्त अकबर जैसे महाप्रतापी बादशाह से वैर बांधा (?)

(१) महाराणा प्रतापसिंहजीको बादशाह अकबर की आधीनता स्वीकारने से बड़ी नफरत थी और वे अकबरको अपने मुखसे कभी बादशाह नहीं कहते थे, बादशाह के वास्ते वे सदा "तुर्क" शब्दका प्रयोग करते थे कहते हैं कि एक दिन बादशाहने अपने दर्बार में बैठे हुए कहा कि महाराणा प्रतापसिंहजीने, हमको बादशाह कहना स्वीकार करलिया है, इसपर बीकानेर वाले पृथ्वीराजजी ने, जो वहां पर उपस्थित थे, बादशाहसे अर्ज किया कि यह बात किसी ने झूंठ ही मालूम कर दी होगी, क्योंकि महाराणा प्रतापसिंहजी अपने प्रणके ऐसे सच्चे हैं कि अपने जीतेजी उसको नहीं छोड़ेंगे. बादशाह ने कहा कि यदि इस बात में तुमको शक हो तो महाराणा से लिखकर दर्याफ्त करलो. इस पर पृथ्वीराजजी ने ये दो दोहे लिखकर महाराणा के पास भेजे—

पातळ जो पतसाह, बोलै मुखहूंता बयण ।
महर पछम दिश मांह, ऊगे कासप राव उत ॥ १ ॥

और बड़ी २ कठिनाइयें [illegible] अपने [illegible] प्रणकी रक्षा की, इसी लिये उनके नामको हिन्दुमात्र प्रातः स्मरणीय मानते हैं, और अनेक कवियोंने उनके उज्वल यशकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है, आढा गोत्रके चारण कवि दुरसाजीने भी महाराणा प्रतापसिंहजीके विषय में यह "विरद छिहत्तरी" रची थी.

दुरसाजी सिरोही दर्बार के पोळपात थे (१) और एक अच्छे कवि होनेके अतिरिक्त वीर प्रकृतिके पुरुष थे. जब महाराणा प्रतापसिंहजी के छोटे भाई जगमा-

---

पटकूं मूंछां पाण, कै पटकूं निज तन करद ।
दीजे लिख दीवाण, इण दो महली बात इक ॥ २ ॥

इस के उत्तर में महाराणा ने नीचे लिखे दो दोहे लिख भेजे—

तुरक कहासी मुख पतौ, इण तनसूं इकलिंग ।
ऊगै जांही ऊगसी, प्राची बीच पतंग ॥ १ ॥
खुसी हूंत पीथल कमध, पटको मूंछां पाण ।
पछटण है जेते पतौ, कलमां सिर केवाण ॥ २ ॥

(१) सोदा ने संसोदिया, सिंढल ने राठोड ।
दुरसावत ने देवड़ा, [illegible] ठौड़ ॥ १ ॥

जजी उनसे नाराज होकर बादशाह अकबरके पास चले गये तो बादशाह ने सिरोही के राव सुल्तानजीका आधा राज उनको देदिया. लेकिन् राव सुल्तानजी से झगड़ा होजाने पर जगमालजी सिरोही छोड़ बादशाहके पास चले गये; बादशाहने उनकी सहायताके लिये जोधपुरके राव चन्द्रसेनजीके बेटे राव रायसिंहजी आदि को फौजके साथ सिरोही पर भेजा, संवत् १६४० कार्तिक सुदी ११ के दिन राव सुल्तानजी से उनकी लड़ाई हुई, जिसमें शाही फौजकी हार हुई, और रायसिंहजी, जगमालजी व कितनेही दूसरे आदमी मारे गये, इस लड़ाईमें कवि दुरसाजी भी सिरोही की सेना में रहकर लड़े थे. इस लड़ाईके बाद जोधपुर की गद्दी पर मोटे राजा उदयसिंहजी बैठे, फिर बादशाह अकबरने जाम बेग, मोटे राजा उदयसिंहजी और महाराणा प्रतापसिंहजीके भाई सगरजीको बड़ी सेना के साथ सिरोही पर भेजा, उनके साथकी लड़ाई में राव सुल्तानजीके कितने ही आदमी मारेगये, कवि दुरसाजी और कई दूसरे घायल हुए और रावजी का

पहाड़ों में शरण लेना पड़ा जब सगरजी वगैरह अपने घायल राजपूतोंको उठाने और शत्रु के जख्मियों को मारने लगे उस समय कवि दुरसाजीको घायल देख सगरजीने कहा, कि यह भी देवड़ोंका कोई सर्दार है इसको भी दूध पिलाना (मारना) चाहिये, इसपर दुरसाजीने कहा कि मैं चारण हूं और राजपूतोंका यह धर्म नहीं है, कि चारणको मारे. इसपर सगरजीने कहा कि तुम चारण हो तो यह समरा देवड़ा जो इस लड़ाईमें बड़ी वीरता के साथ काम आया है उसकी प्रशंसामें एक दोहा कहो. जिसपर उन्होंने तत्काल यह दोहा कहा:—

धर रावां जश डूँगरां, ब्रद पोतां शत्रु हांण ॥
समरे मरण सुधारियो, चहु थोकां चहुवांण ॥ १ ॥

यह सुनते ही सगरजी बड़े सन्मानके साथ उनको पालकीमें बिठलाकर अपने डेरेपर लेगये और वहांपर उनके घावोंका इलाज करवाया गया.

विक्रमी संवत् १६४३ में मोटे राजा उदयसिंहजीने चारणोंके गांवोंपर जब्ती भेजी जिससे कितने ही चारण तागा (आत्मघात) करके मरगये, उसवक्त दुरसा-

जीने भी अपने गलेमें छुरी मारी थी.

ऐसा प्रसिद्ध है कि राय सुल्तानजीके साथकी दूसरी लड़ाईके बाद दुरसाजीका दिल्ली जाना हुआ, और बादशाह अकबरने उनकी कविता से प्रसन्न होकर उन की बहुत कुछ इज्जत (१) बढाई.

सम्वत १६५३ के माघ शुदि ११ को महाराणा प्रतापसिंहजी का स्वर्गवास हुआ, जिसकी खबर सुन बादशाह अकबर ने बहुत फिक्र किया, और चुप होरहा, जिसपर दुरसाजी ने नीचे लिखी हुई छप्पय कही, जिसका जिक्र सुन बादशाह ने उनके मुखसे वह छप्पय सुनी और इनआम देकर कहा कि इस कविने यथार्थ कहा है.

अश लेगो अणदाग, पाग लेगो अण नामी ।
गो आडा गवड़ाय, जिको बहतो धुर वामी ॥
नवरोजे नह गयो, न गो आतशाँ नवल्ली ।
न गो झरोखा हेठ, जेठ दुनियाण दहल्ली ॥

(१) कहते हैं कि दुरसाजी को बादशाह ने अपने दर्बार में बैठने की इजत भी बख्शी थी.

गहलोत राण जीतीगयो, दसण मूंद रसणा डसी ।
नीसास मूक भरिया नयण, तो मृत शाह प्रतापसी ॥

आबू पर्वतपर अचलेश्वर के मन्दिर में चारणों की दो पीतल की मूर्तियें हैं, जिनके नीचेके लेखसे पाया जाता है कि वे सम्वत् १६८६ में दुरसाजीने बनाई थीं.

दुरसाजीकी बनाई हुई महाराणा प्रतापसिंहजीके विषय की बहुतसी कविता मिलती है, जिसमें विरदछिहत्तरी मुख्य है, जिसकी एक हस्त लिखित पुस्तक लालस चारण कवि अमरदानजी की मारफत प्राप्त हुई जिसके अनुसार यह पुस्तक छपवाई गई है, मूल पुस्तकमें कई स्थलों पर अशुद्धियें थीं जिनको जहां तक हो सका शुद्ध किया है, तोभी कहीं २ अशुद्धियें (१) रह गई हैं, जिनके लिये पाठकोंसे क्षमा चाहता हूं.

(१) विरदछिहत्तरी में कितनेक सोरठे उलट पुलट और शायद कुछ क्षेपक भी हो तो आश्चर्य नहीं, पुस्तक एक ही मिला जिससे दूसरे पुस्तकोंसे मिलान न होसका नीचे लिखा हुआ सोरठा भी दुरसाजीका ही कहा सुनाजाता है, परन्तु इस पुस्तकमें वह पाया नहीं गया.

पोह गोचळिया पास, आळूबा अकबर तणी ।
राणा खमे न रास, प्रबळो सांद प्रतापसी ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीमान् महाराजाधिराज महाराणाजी
श्री १०८ श्री हिन्दवासूरज
प्रतापसिंहजी की
विरद छिहत्तरी.

॥ सोरठा ॥

अलख पुरष आदेस, देश बचाय दयानिधे ॥
वरनन करूं विसेस, सुहृद नरेस प्रतापसी ॥ १ ॥
गढ ऊंचौ गिरनार, नीचौ आबू ही नहीं ॥
अकबर अघ अवतार, पुन अवतार प्रतापसी ॥ २ ॥
कळजुग चलै न कार, अकबर मन अंजस युँही ॥
सतजुग सम संसार, परगट राणा प्रतापसी ॥ ३ ॥
अकबर गरब न आंणा, हिंदू सह चाकर हुवा ॥
दीठौ कोइ दिवाणा, करतौ लटका कटहडै ॥ ४ ॥

सुणतां अकबर शाह, दाह हिये लागी दुसह ॥
बिलमला बदराह, एक राह करदूं अवश ॥ ५ ॥
मन अकबर मज़बून, फूट हिन्दवां बेफिकर ॥
काफ़र कोम कपूत, पकड़ो रांणा प्रतापसी ॥ ६ ॥
अकबर कीना याद, हिन्दू नृप हाजर हुवा ॥
मेदपाट मरजाद, पगां न लगौ प्रतापसी ॥ ७ ॥
म्लेच्छां आगल माथ, नमै नहीं नरनाथरौ ॥
सो करतव्य सनाथ, थारौ रांणा प्रतापसी ॥ ८ ॥
तुरा बहेरा बाट, बाट जिकरा बहग्यौ बिसद ॥
खाग त्याग खत्रवाट, पूगो रांणा प्रतापसी ॥ ९ ॥
चितवै चित चीतोड़, चिता जलाई सो चतुर ॥
मेवाड़ो जगमोड़, पावन पुरुष प्रतापसी ॥ १० ॥
कदै नमावै कंध, अकबर ढिग आवै न औ ॥
सूरज बंश सँबंध, पाळै रांणा प्रतापसी ॥ ११ ॥

अकबर कुटिल अनीत, और विटल सिर आदरै ॥
कुकुल उत्तम रीत, पालै रांणा प्रतापसी ॥१२॥
तोपै हिन्दू लाज, सगपण रोपै तुरकसूं ॥
आरज कुलरी आज, पूंजी राणा प्रतापसी ॥१३॥
अकबर पथर अनेक, के भूपति भेला किया ॥
हाथ न लागौ हेक, पारस रांणा प्रतापसी ॥१४॥
साँगौ धरम सहाय, बाबरसूँ भिड़ियौ बिहस ॥
अकबर कदमाँ आय, पड़े न राणा प्रतापसी ॥१५॥
आपै अकबर आंण, थाप उथापै औ थिरा ॥
बापै रावल बांण, तापै रांणा प्रतापसी ॥ १६ ॥
सुखहित श्याल समाज, हिन्दू अकबर बस हुआ॥
रोसीलौ मृगराज, पजै न रांणा प्रतापसी ॥ १७॥
अकबर कूट अजांण, हियाफूट छोड़ै न हठ ॥
पगां न लागण पांण, पणधर रांणा प्रतापसी ॥१८॥

हे अकबर घर हाण, डांण गहे नीची दिसट ॥
तजे न ऊंची ताण, पौरस रांण प्रतापसी ॥१९॥
जांणै अकबर जोर, तौ पण तांणै तोर तिड़ ॥
आ बलाय है ओर, प्रसणां खोर प्रतापसी ॥२०॥
अकबर हिये उचाट, रात दिवस लागो [illegible] ॥
रजवट वट समराट, पाटप रांण प्रतापसी ॥२१॥
अकबर मारग आठ, जवन रोक राखी अगत ॥
परम धरम जश पाठ, पढियौ रांण प्रतापसी ॥२२॥
अकबर समँद अथाह, तिहँ डूबा हिन्दू तुरक ॥
मेवाड़ो तिण माँह, पोयण फूल प्रतापसी ॥२३॥
अकबरिये इक बार, दागल की सारी दुनी ॥
अण दागल असवार, रहियो रांण प्रतापसी ॥२४॥
अकबर घोर अँधार, ऊंघांणा हिन्दू अवर ॥
जागै जग दातार, पौहरै रांण प्रतापसी ॥ २५ ॥

जग जाडा जूँझार, अकबर पग चांपै अधिप।
गो राखण गुंजार, पिंडमैं रांण प्रतापसी ॥२६॥
अकबर कनै अनेक, नम नम नीसारिया नृपति।
अनमी रहियौ एक, पुहुमी रांण प्रतापसी ।२७।
करै खुशामद कूर, करै खुशामद कूकरा ॥
दुरस खुशामद दूर, पुरुष अमोल प्रतापसी ।२८।
अकबर जङ्ग उफांण, तंग करण भेजै तुरक ॥
गंगावत रिझ गांण, पांण न तजै प्रतापसी ।२६।
हलदीघाट हरोल, घमँड उतारण अरिघडा ॥
आरण करण अडोल, पहुँच्यो रांण प्रतापसी ३०
थिर नृप हिन्दूथांन, लातरगा मग लोभ लग ॥
माता भूमी मांन, पूजी रांण प्रतापसी ॥ ३१ ॥
सेलां अणी सिनांन, धारा तीरथमैं धसै ॥
देण धरम रण दांन, पुरट शरीर प्रतापसी ॥ ३२॥

ठग अकबर दल ठांण, अग अग झगड़ं आथड़े
मग मग पाड़ै मांण, पग पग रांण प्रतापसी ३३
दिल्ली हूँत दुरूह, अकबर चढियो एक दम ॥
रांण रसिक रण रूह, पलटै केम प्रतापसी ।३४।
चित्त मरण रणी चाय, अकबर आधीनी बिना ॥
पराधीन दुख पाय, पुनि जीवै न प्रतापसी ।३५।
तुरक हिन्दवाँ ताँण, अकबर लायो एकठा ॥
म्लेच्छां गालण माँण, पांण कृपांण प्रतापसी ३६
गोहिल कुल धन गाढ, सेवण अकबर लालची ॥
कौडी दै नह काढ, पण दृढ रांण प्रतापसी ।३७।
अकबर मच्छ अथांण, पूँछ उछालण बल प्रबळ
गोहिल वत गहरांण, पाथोनिधी प्रतापसी ।३८।
नित गुधलावण नीर, कुंभी सम अकबर क्रमे ॥
गोहिल रांण गँभीर, पण गुधलै न प्रतापसी ३९

उड़े रीठ अणपार, पीठ लगा लाखां पसण ॥
वेड़ीगार बकार, पैठो उदयाचल पतौ ॥ ४० ॥
अकबर दल अप्रमांण, उदैनयर घेरै अनय ॥
खागां बल खुमांण, साहां दलण प्रतापसी॥४१
देवारी सुरद्वार, अड़ियौ अकबरियौ असुर ॥
लड़ियो भड़ ललकार, पौलां खोल प्रतापसी॥४२
रोके अकबर राह, ले हिन्दू कूकर लखां ॥
वीभरतौ वाराह, पाड़े घणां प्रतापसी ॥ ४३ ॥
देखे अकबर दूर, घेरौ दे दुसमण घड़ा ॥
सांगां हर रण सूर, पैर न खिसै प्रतापसी ।४४।
अकबर तड़के आप, फतै करण च्यारूं तरफ ॥
पण रांणो परताप, हाथ न चढै हमीर हर ।४५।
अकबर किला अनेक, फतै किया निज फौजसूं ॥
अकल चलै नह एक, पाधर लड़े प्रतापसी।४६।

दुबिधा अकबर देख, किसा विधसूं आपल करे ।
पमगा ऊपर पेख, पाखर रांण प्रतापसी ॥४७॥
हिरदै ऊगा होत, सिर अकबर घूणा सदा ॥
दिन दूणा देसोत, पूणा व्हे न प्रतापसी ।४८।
कलपे अकबर काय, गुण पूंगीधर गौड़िया ॥
मणधर छाबड मांय, पड़ न रांण प्रतापसी ।४९।
माहे दाबण मेवाड़, राड़ चाड़ अकबर रचे ॥
बिखे बिणायत बाड, पृथुल पहाड़ प्रतापसी ।५०
बंधियो अकबर बैर, रमत गैर रांकौ रिपू ॥
कन्द मूल फल कैर, पावै रांण प्रतापसी ।५१।
भागे सागे भाम, अमृत लागे ऊमरा ॥
अकबर तल आरांम, पेखै जहर प्रतापसी ।५२।
अकबर जिसा अनेक, आहव अड़े अनेक अरि
असलो नजे न एक, पकड़ी टेक प्रतापसी ।५३।
लंघण कर लंकाल, सादूलो भूखो सुवै ॥

कुळवट छोड कृपाळ, पैंड न देत प्रतापसी ।५४।
अकबर मैंगळ अच्छ, मांझळ दळ घूमै मसत ॥
पंचानन पलभच्छ, पटकै छड़ा प्रतापसी ।५५।
दन्ती दलसूं दूर, अकबर आवै एकलौ ॥
चौड़ै खल चकचूर, पळमैं करै प्रतापसी ॥५६॥
चितमैं गढ चीतोड़, रांणारै खटकै रयण ॥
अकबर पुनरौ ओड़, पेलै दौड़ प्रतापसी ॥ ५७॥
अकबर करै अफंड, मद प्रचंड मारग लगै ॥
आरज भांण अखण्ड, प्रभुता रांण प्रतापसी।५८।
घटसूं औघट घाट, घसियौ अकबरियै घणौ ॥
इल चैनण उपवाट, परमल उठी प्रतापसी ।५९।
अकबर जतन अपार, रात दिवस रोकण करै ॥
पूगी समदां पार, पंगी रांण प्रतापसी ॥ ६० ॥
बडी विपत सह बीर, बडी कीत खाटी बसू ॥
धरम धुरंधर धीर, पौरस धिनौ प्रतापसी॥६१॥

वसुधा किधौ विख्यात, समरथ कुळ सीसोदियां।
रांणा जसरी रात, प्रगट्यौ भलां प्रतापसी ।६२।
जिणरौ जस जग मांय, जिणरौ जग धिन जीवणौ
नैड़ौ अपजश नांय, पण धर धिनौ प्रतापसी ६३
अजरामर धन एह, जश रह जावै जगतमैं ॥
दुख सुख दोनूँ देह, सुपन समांन प्रतापसी ।६४।
अकबर जासी आप, दिल्ली पासी दूसरा ॥
पुनरासी परताप, सुजस न जासी सूरमा ।।६५।।
सफळ जनम सुदतार, सफळ जनम जग सूरमां।
सफल जोग जगसार, पुर अप प्रभा प्रतापसी ६६
सारी बात सुजांण, गुण सागर गाहक गुणां ॥
आयोड़ो अवसांण, पांतरियै न प्रतापसी ।६७।
छत्रधारी छत्र छांह, धरम धाय सोयो धरा ॥
बांह गहयांरी बांह, परत न तजै प्रतापसी ।६८।
अंतिम एह उपाय, विश्वंभर न विसारियै ॥

National Library
24087. dt. 21-8-68 Calcutta

साथे धरम सहाय, पळ पळ रांण प्रतापसी ।६९।
मनरी मनरै मांय, अकबररै रहगी अकस ॥
नर वर करियै नांय, पूगी रांणा प्रतापसी ॥७०॥
औ जो अकबर राह, सैंधव कुंजर सांवठा ॥
बांसै तो बहताह, पिंजर थया प्रतापसी ॥ ७१ ॥
अकबरियौ हत आस, अंबखास झांखै अधम ॥
नांखै हियै निसास, पास न रांणा प्रतापसी ।७२।
मनमैं अकबर मोद, कलमां विच धारै न कुट॥
सुपनामैं सीसोद, पलैं न रांणा प्रतापसी ॥७३॥
चारण वरण चितार, कारण लख महिमा करी॥
धारण कीजै धार, परम उदार प्रतापसी ॥७४॥
आशा जगत उदार, भारतवरष भवांन भुज ॥
आतम सम आधार, पृथवी रांणा प्रतापसी।७५।
कथी प्रार्थना कीन, पंडित हुं न प्रवीणपद ॥
[illegible]रसौं आढो दीन, प्रभु तव शरण प्रतापसी ।७६।

SP 1/64

पुस्तकों का सूचीपत्र

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]विनोद
[illegible]पचीसी
[illegible]
मारवाड़ी व्याकरण [illegible]
मारवाड़ी पैली पुस्तक आधा आना
मारवाड़ी दूजी पुस्तक [illegible]

पण्डित रामकर्ण मोतीचौक जोधपु

National Library
Calcutta